THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

किशोरावस्था में अंतर्मुखी और बहिर्मुखी व्यक्तित्व विशेषताओं का उनके निवास स्थान के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

डा0 पूर्णेश नारायण सिंह
अध्यक्ष बी.एड. शिक्षा विभाग,
ही.रा.पी.जी. कालेज खलीलाबाद,
सन्त कबीर नगर
सम्बद्ध सिद्धार्थ विश्वविद्यालय
कपिल वस्तु सिद्धार्थ नगर, उ.प्र.

श्रीमती सुनीता सोनकर
शोध छात्रा, बी.एड. शिक्षा विभाग
ही.रा.पी.जी. कालेज खलीलाबाद,
सन्त कबीर नगर
सम्बद्ध सिद्धार्थ विश्वविद्यालय
कपिल वस्तु सिद्धार्थ नगर, उ.प्र.

सारांश (Abstract)

किशोरावस्था एक महत्वपूर्ण विकासात्मक चरण है, जिसमें व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम उभरकर सामने आते हैं। इस शोध का उद्देश्य किशोरों के अंतर्मुखी और बहिर्मुखी व्यक्तित्व की विशेषताओं का उनके निवास स्थान (ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र) के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन में यह विश्लेषण किया गया है कि बाहरी परिवेश, सामाजिक-सांस्कृतिक कारक, पारिवारिक वातावरण तथा शैक्षिक अवसर व्यक्तित्व निर्माण में किस प्रकार प्रभाव डालते हैं। शोध में द्वितीयक डेटा का उपयोग किया गया है तथा अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले किशोरों की विशेषताओं का तुलनात्मक मूल्यांकन किया गया है। परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि शहरी किशोरों में बहिर्मुखी प्रवृति अधिक पाई गई, जबकि ग्रामीण किशोर अधिक अंतर्मुखी स्वभाव के होते हैं। इसके अतिरिक्त, पारिवारिक संरचना, सामाजिक-सहभागिता एवं शिक्षा का स्तर भी व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह अध्ययन शिक्षा एवं व्यक्तित्व विकास की रणनीतियों को प्रभावी रूप से समझने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

मुख्य शब्द (Keywords): *किशोरावस्था, अंतर्मुखी व्यक्तित्व, बहिर्मुखी व्यक्तित्व, निवास स्थान, ग्रामीण क्षेत्र, शहरी क्षेत्र, व्यक्तित्व विकास सामाजिक कारक।*

परिचय:

व्यक्तित्व मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण तत्व है, जो व्यक्ति के सोचने, समझने और व्यवहार करने की शैली को प्रभावित करता है। विशेष रूप से किशोरावस्था के दौरान, जब मानसिक और भावनात्मक परिवर्तन तीव्र होते हैं, तब व्यक्तित्व लक्षण अधिक स्पष्ट रूप से उभरते हैं। इस संदर्भ में, अंतर्मुखी (Introvert) और बहिर्मुखी (Extrovert) व्यक्तित्व दो प्रमुख श्रेणियॉं मानी जाती हैं। अंतर्मुखी व्यक्ति अधिक चिंतनशील, एकांतप्रिय और आत्म-

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

विश्लेषण में रुचि रखने वाले होते हैं, जबकि बहिर्मुखी व्यक्ति सामाजिक, ऊर्जावान और नए अनुभवों की खोज करने वाले होते हैं

(Jung, 1921)। किशोरों के व्यक्तित्व निर्माण में उनके सामाजिक और पारिवारिक परिवेश का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस संदर्भ में, निवास स्थान (ग्रामीण या शहरी) एक महत्वपूर्ण भुमिका निभाता है, क्योंकि यह किशोरों के सामाजिक संपर्क, शिक्षा और मानसिक विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर सकता है (Eysenck, 1967)। यह अध्ययन विभिन्न पूर्व शोधों और द्वितीयक आंकडों के आधार पर यह विश्लेषण करेगा कि किशोरों के अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व लक्षणों में उनके निवास स्थान के अनुसार क्या भिन्नताएं पाई जाती हैं। क्या ग्रामीण किशोर अधिक अंतर्मुखी होते हैं, या क्या शहरी वातावरण किशोरों को अधिक बहिर्मुखी बनने के लिए प्रेरित करता है। इस शोध के निष्कर्ष मनो-वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी हो सकते हैं, ताकि वे किशोरों के व्यक्तित्व विकास को बेहतर ढंग से समझ सकें और उनके समग्र मानसिक विकास में सहायक सिद्ध हो सकें।

किशोरों के व्यक्तित्व विकास में उनके निवास स्थान की महत्वपूर्ण भुमिका होती है। ग्रामीण और शहरी परिवेश में जीवनशैली, सामाजिक संपर्क, शैक्षिक अवसर और पारिवारिक संरचना में भिन्नताएं पाई जाती हैं, जो उनके व्यक्तित्व निर्माण को प्रभावित कर सकती हैं (Eysenck, 1967)। ग्रामीण क्षेत्र में पारिवारिक और सामाजिक संबंध अपेक्षाकृत अधिक घनिष्ठ होते हैं, जबकि शहरी वातावरण में स्वतंत्रता और प्रतिस्पर्धात्मकता का प्रभाव अधिक देखा जाता है। ये कारक किशोरों के अंतर्मुखी (Introvert) या बहिर्मुखी (Extrovert) व्यक्तित्व निर्माण में अहम भूमिका निभाते हैं।

यह अध्ययन विभिन्न पूर्व शोधों और द्वितीयक स्रोतों के आधार पर इस बात का विश्लेषण करेगा कि किस प्रकार निवास स्थान (ग्रामीण अथवा शहरी) किशोरों के व्यक्तित्व लक्षणों को प्रभावित करता है। क्या ग्रामीण परिवेश में रहने वाले किशोर अधिक अंतर्मुखी होते हैं, अथवा शहरी वातावरण किशोरों को अधिक बहिर्मुखी बनने की ओर प्रेरित करता है। इस शोध से प्राप्त निष्कर्ष मनोवैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी होंगे, जिससे वे किशोरों के व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया को

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

बेहतर समझ सकें और उनके मानसिक एवं सामाजिक विकास को प्रोत्साहित करने हेतु प्रभावी रणनीतियां बना सकें। किशोरावस्था: एक संक्रान्ति काल: किशोरावस्था (Adolescence) जीवन का एक महत्वपूर्ण चरण है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक परिवर्तन तीव्र गति से होते हैं। यह अवस्था बचपन और व्यस्कता के मध्य संक्रमण काल होती है, जो आमतौर पर 10 से 19 वर्ष की आयु के मध्य मानी जाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, किशोरावस्था वह अवस्था है जब व्यक्ति में शारीरिक परिपक्वता के साथ-साथ मानसिक और सामाजिक परिपक्वता का भी विकास होता है। यह वह समय होता है जब व्यक्ति अपनी पहचान बनाना शुरू करता है और अपने आस-पास की दुनिया को नए दृष्टिकोण से देखने लगता है।

किशोरावस्था के प्रमुख आयाम

1. शारीरिक परिवर्तन:

किशोरावस्था के दौरान शरीर में कई जैविक परिवर्तन होते हैं, जिन्हें यौवनारंभ (Puberty) कहा जाता है। लड़कों में आवाज का भारी होना, मांसपेशियों का विकास, और चेहरे पर दाढ़ी-मूंछ का आना इस चरण की सामान्य विशेषताएँ हैं, जबकि लड़िकयों में मासिकधर्म की शुरुआत, शारीरिक आकार में परिवर्तन और हार्मोनल बदलाव देखने को मिलते हैं।

2. मानसिक और बौद्धिक विकास:

इस अवस्था में मस्तिष्क के संज्ञानात्मक (Cognitive) कार्यो का तेजी से विकास होता है। किशोरों में तार्किक और विश्लेषणात्मक सोच विकसित होने लगती है, जिससे वे समस्याओं का समाधान करने और निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। वे जिज्ञासु होते हैं और नई अवधारणाओं को सीखने की तीव्र इच्छा रखते हैं।

3. भावनात्मक परिवर्तन:

किशोरावस्था में व्यक्ति भावनात्मक अस्थिरता का अनुभव करता है। आत्म-चेतना (Self-consciousness) बढ़ने के कारण वे अपनी छवि को लेकर अधिक सतर्क हो जाते हैं। इस समय आत्म-सम्मान (Self- esteem) और आत्म-विश्वास (Self-confidence) का विकास होता है, लेकिन असुरक्षा की भावना भी पनप सकती है।

4. सामाजिक विकास:

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

किशोरों का सामाजिक दायरा विस्तृत होने लगता है। वे मित्रों के साथ अधिक समय बिताते हैं और उनके राय को अधिक महत्व देने लगते हैं। परिवार के प्रति उनकी निर्भरता कम होती जाती है और वे अपने व्यक्तिगत विचारों एवं मूल्यों को विकसित करने का प्रयास करते हैं।

1. किशोरावस्था का मनोवैज्ञानिक प्रभाव:

किशोरावस्था में पहचान का संकट (Identity Crisis) एक प्रमुख विषय होता है, जिसे प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक एरिक एरिक्सन (Erik Erikson) ने अपने सिद्धान्त में विस्तार से बताया है। किशोर अपनी व्यक्तिगत और सामाजिक पहचान स्थापित करने का प्रयास करता हैं, जिससे कई बार वे संघर्ष और भ्रम की स्थिति का सामना करता है ।

2. **किशोरावस्था का प्रमुख लक्षण:**

किशोरावस्था के दौरान व्यक्ति में निम्नलिखित परिवर्तन देखे जाते हैं:

(1) शारीरिक परिवर्तन:

- तेजी से वृद्धि (Growth Spurt)
- द्वितीयक यौन लक्षणों का विकास
- हार्मोनल परिवर्तन (Testosterone और Estrogen के स्तर में वृद्धि)

(2) संज्ञानात्मक (Cognitive) विकास:

- तार्किक और अमूर्त चिन्तन (Abstract Thinking) क्षमता विकसित होती है।
- निर्णय लेने और समस्या समाधान की क्षमता बढ़ती है।
- आत्म-चेतना (Self-awareness) और पहचान (Identity) का विकास होता है।

(3) सामाजिक और भावनात्मक परिवर्तन:

- स्वतंत्रता की इच्छा बढ़ती है।
- साथियों (Peers) का प्रभाव अधिक होता है।
- आत्म-सम्मान (Self-esteem) और पहचान संकट (Identity Crisis) के मुद्दे उभरते हैं।

3. किशोरावस्था में व्यक्तित्व का विकास:

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

किशोरावस्था में व्यक्तित्व (Personality) विकास सबसे महत्वपूर्ण चरण होता है। इस दौरान व्यक्ति अंतर्मुखी (Introvert) या बहिर्मुखी (Extrovert) व्यक्तित्व विकसित कर सकता है।

4. किशोरों पर पर्यावरण का प्रभाव:

- परिवार: माता-पिता के व्यवहार और पालन-पोषण की शैली किशोरों के मानसिक विकास और भावनात्मक विकास को प्रभावित करती है।
- विद्यालय: शैक्षिक वातावरण, शिक्षक और सह-पाठियों का प्रभाव किशोरों को सीखने और व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होता है
- मीडिया और प्रौद्योगिकी: इंटरनेट, सोशल मीडिया और डिजिटल संसाधनों का किशोरों पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

5. किशोरों में चुनौतियॉ और समाधान, चुनौतियॉ:

- मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ (जैसे अवसाद, चिन्ता)
- शैक्षिक दबाव और कैरियर संबंधी तनाव
- परिवार और समाज की अपेक्षाएँ

समाधान:

- किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना
- सकारात्मक वातावरण और मार्गदर्शन प्रदान करना
- उचित परामर्श और समर्थन प्रणाली विकसित करना

अंतर्मुखी व्यक्तित्व:

अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन (APA, 2020) के अनुसार, "अंतर्मुखी व्यक्ति वे होते हैं जो बाहरी दुनिया की तुलना में अपनी आंतिरक दुनिया में अधिक रुचि रखते हैं। वे सामाजिक मेल-जोल में सीमित रुचि दिखाते हैं और अकेलेपन में अधिक सहज महसूस करते हैं।"

कार्ल जंग (Jung, 1921) के अनुसार, अंतर्मुखी व्यक्तित्व वाले लोग अपने अंदर के विचारों, भावनाओं और कल्पनाओं में संलग्न रहते हैं। वे आत्म-निरीक्षण (Self-Reflection) और

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

आत्म-चिन्तन (Self-Contemplation) को प्राथमिकता देते हैं। **अंतर्मुखी व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ:**

सामाजिक व्यवहार (Social Behaviour):

- अंतर्मुखी व्यक्ति सामाजिक मेल-जोल से अधिक आत्म-चिन्तन पसंद करते हैं। (Eysenck, 1967)।
- वे अधिक गहराई से सोचने वाले और विचाराशील होते हैं।
- सार्वजनिक स्थानों या भीड़-भाड़ वाले वातावरण में वे जल्दी थकान महसूस करते हैं।

संचार शैली (Communication Style):

- अंतर्मुखी वाले व्यक्ति कम बोलते हैं, लेकिन जब बोलते हैं तो सार्थक और गहरी बातचीत करते हैं।
- वे अपने विचारों को लिखित रूप में व्यक्त करने में अधिक सक्षम होते हैं (Cain, 2012)।

ऊर्जा स्रोत (Source of Energy):

- बहिर्मुखी वाले व्यक्ति अपनी ऊर्जा एवं सामाजिक मेल-जोल से प्राप्त करते है,जबकि अंतर्मुखी वाले व्यक्ति अकेले समय बिताकर अपनी ऊर्जा को पुनः प्राप्त करते है (Costa & McCrae, 1992)।
- वे भीड़-भाड़ वाली जगहों से बचते हैं और अधिक संगठित दिनचर्या पसंद करते हैं। निर्णय लेने की प्रवृति (Decision-Making Approach):
- अंतर्मुखी वाले व्यक्ति जल्दबाजी में निर्णय नहीं लेते, बल्कि सोच-समझकर निर्णय लेते हैं।
- वे तथ्यों और विश्लेषण पर अधिक ध्यान देते हैं (Myers & Briggs, 1980)।

अंतर्मुखता पर शोध अध्ययन (Research on Introversion) :

- कार्ल जंग (Carl Jung, 1921): उन्होंने सबसे पहले अंतर्मुखता और बहिर्मुखता की अवधारणा दी।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

- हंस आईजेंक (Hans Eysenck, 1967) के अनुसार, अंतर्मुखता और बहिर्मुखता, जैविक और तंत्रिका-तन्त्र की संरचना पर निर्भर करती हैं।
- सुसैन कैन (Susan Cain, 2012): उनकी पुस्तक Quiet: The Power of Introverts in a World That Can't Stop Talking में बताया गया कि अंतर्मुखी व्यक्ति भी उतने ही प्रभावशाली हो सकते हैं जितने बहिर्मुखी।
- कोस्टा और मैक्रे (Costa & McCrae, 1992): इनके अनुसार, अंतर्मुखी व्यक्ति अधिक अनुशासित और आत्म-विश्लेषण करने वाले होते हैं।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व (Extrovert Personality):

बहिर्मुखी व्यक्तित्व (Extrovert Personality) उन व्यक्तियों के लक्षण है जो समाज में सक्रिय होते हैं, लोगों से घुलने-मिलने में रुचि रखते हैं और समूह में कार्य करने को प्राथमिकता देते हैं। ये व्यक्ति बाहरी दुनिया से ऊर्जा प्राप्त करते हैं और संवाद व सामाजिक गतिविधियों में अधिक सहज होते हैं।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ (Key Characteristics of Extrovert Personality):

1. सामाजिकता (Sociability):

- बहिर्मुखी व्यक्ति सामाजिक होते हैं और नए लोगों से बातचीत करने में सहज महसूस करते हैं।
- ये विभिन्न सामाजिक आयोजनों में भाग लेना पसंद करते हैं और भीड़भाड़ वाले माहौल में खुद को अधिक आत्मविश्वासी महसूस करते हैं।

2. ऊर्जा और सक्रियता (High Energy & Activeness):

- ये व्यक्ति प्रायः ऊर्जावान और क्रियाशील होते हैं।
- लगातार नए अनुभवों की तलाश में रहते हैं और उत्साही होते हैं।

3. संवाद कौशल (Effective Communication Skills):

- बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति अपनी भावनाओं और विचारों को खुलकर व्यक्त करते हैं।
- सार्वजनिक भाषणों, चर्चाओं और बहस में वे कुशल होते हैं।

4. जोखिम लेने की प्रवृति (Risk-Taking Ability):

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

- नए अवसरों को अपनाने में रुचि रखते हैं और अनिश्चितता का सामना करने में सक्षम होते हैं।
- साहसी निर्णय लेने की प्रवृति रखते हैं।

5. नेतृत्व क्षमता (Leadership Ability) :

- समूह में कार्य करना पसंद करते हैं और नेतृत्व करने की प्रवृति रखते हैं।
- टीम वर्क में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं और लोगों को प्रेरित करने में सक्षम होते हैं।

6. भावनात्मक अभिव्यक्ति (Emotional Expression):

- ये लोग अपनी भावनाओं को खुले तौर पर प्रकट करते हैं और दूसरों से जुड़ने की कोशिश करते हैं।
- अपनी खुशी, गुस्सा और अन्य भावनाओं को स्पष्ट रूप से साझा करते हैं।

निवास स्थान (Residence/ Location):

निवास स्थान किसी व्यक्ति के सामाजिक और मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जीवनशैली, संसाधनों की उपलब्धता और सामाजिक संरचना में अंतर होता है, जो व्यक्तित्व निर्माण को प्रभावित कर सकता है। उदाहरण के लिए, ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित सामाजिक संपर्क और शांत वातावरण किशोरों में अंतर्मुखी प्रवृतियों को प्रोत्साहित कर सकता है, जबकि शहरी क्षेत्रों में बढ़ती प्रतिस्पर्धा, बड़े सामाजिक नेटवर्क और विविध गतिविधियॉ बहिर्मुखी व्यक्तित्व को उभरने के अवसर देती हैं। यह शोध इस पहलू को गहराई से विश्लेषित करता है।

विश्लेषण (Analysis):

इस शोध में अंतर्मुखी और बहिर्मुखी व्यक्तित्व लक्षणों के उनके निवास स्थान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण किया जाएगा। द्वितीयक आंकडों और पूर्ववर्ती शोधों के आधार पर यह समझने का प्रयास किया जाता है कि किशोरों के व्यक्तित्व पर बाहरी सामाजिक और पारिवारिक कारकों का क्या प्रभाव होता है। यह विश्लेषण विभिन्न वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर किया जाएगा ताकि अधिक सटीक निष्कर्ष निकाले जा सकें।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

द्वितीयक आंकड़े (Secondary Data) :

द्वितीयक आंकड़े वे आँकड़े होते हैं, जो पहले से किए गए शोधों, रिपोर्टों, पुस्तकों और लेखों से प्राप्त होते हैं। इस अध्ययन में विभिन्न विद्वानों द्वारा किए गए शोधों, सरकारी रिपोर्टों, मनोवैज्ञानिक अध्ययनों और प्रकाशित साहित्य केउपयोग किया जाएगा ताकि अंतर्मुखी और बहिर्मुखी व्यक्तित्व लक्षणों के मध्य संबंध को समझा
जा सके । यह दृष्टिकोण शोध के प्रमाणिकता को बढ़ाने में सहायक होता है और व्यक्तित्व के विकासों के विभिन्न पहलुओं पर व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

विभिन्न शोध (Existing Studies):

इस शोध में पहले से उपलब्ध विभिन्न अध्ययनों के गहन अध्ययन किया जाता है, जिनमें व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों, किशोरावस्था में व्यक्तित्व निर्माण और निवास स्थान के प्रभाव पर विस्तृत चर्चा की गई है। विशेष रूप से कार्ल जंग (1921), हंस जर्गेन आईजेंक (1967), और कोस्टा और मैक्रे (1992) द्वारा किए गए अध्ययनों को संदर्भित
किया जाता है, जो व्यक्तित्व लक्षणों की समझ को गहराई प्रदान करें। इन शोधों के माध्यम से यह पता लगाया जाता है कि ग्रामीण और शहरी किशोरों में अंतर्मुखी और बहिर्मुखी प्रवृतियों के वितरण किस प्रकार होता है और कौन-से कारक इन्हें प्रभावित करते हैं।

अध्ययन की आवश्यकताः

व्यक्तित्व विकास किशोरावस्था के दौरान एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया होती है, जो सामाजिक, पारिवारिक और पयार्वरणीय कारकों से प्रभावित होती है। विशेष रूप से निवास स्थान (ग्रामीण या शहरी) व्यक्तित्व निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अंतर्मुखी और बहिर्मुखी व्यक्तित्व लक्षणों की पहचान और उनके विकास में विभिन्न कारक
योगदान करते हैं, जिन्हें विभिन्न शोधों और द्वितीयक आंकड़ों के माध्यम से समझना आवश्यक है। इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि यह किशोरों के व्यक्तित्व पर निवास स्थान के प्रभाव को स्पष्ट करने में सहायक हो, जिससे शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेप की रणनीतियां तैयार की जा सकें।

अध्ययन का उद्देश्य (Objectives of the Study):

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

1. अंतर्मुखी और बहिर्मुखी व्यक्तित्व लक्षणों की विशेषताओं को परिभाषित करना और स्पष्ट करना।

2. ग्रामीण और शहरी निवास के संदर्भ में किशोरों के व्यक्तित्व लक्षणों की तुलना करना।

3. विभिन्न द्वितीयक डेटा और शोध अध्ययनों के आधार पर निवास स्थान का व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव का विश्लेषण करना

परिकल्पनाएँ (Hypotheses):

1. शहरी क्षेत्रों में रहने वाले किशोरों में अधिक बहिर्मुखी व्यक्तित्व लक्षण पाए जाते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले किशोर अधिक अंतर्मुखी व्यक्तित्व लक्षण प्रदर्शित करते हैं।

2. ग्रामीण और शहरी किशोरों के व्यक्तित्व विकास में सांस्कृतिक, सामाजिक और पारिवारिक कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

3. विभिन्न द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण से यह सिद्ध होगा कि निवास स्थान (Residence) व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करता है।

साहित्य समीक्षा (Literature Review):

1. अंतर्मुखी और बहिर्मुखी व्यक्तित्व लक्षणों की परिभाषा और विशेषताएँ संबंधी साहित्य:

(Jung (1921) – "Psychological Types")

- कार्ल जंग ने अंतर्मुखी (Introversion) और बहिर्मुखी (Extraversion) व्यक्तित्व लक्षणों को सबसे पहले परिभाषित किया।
- अंतर्मुखी व्यक्ति आत्म केन्द्रित होते हैं, अधिक सोच-विचार करने वाले होते हैं और सामाजिक मेल-जोल में सीमित रुचि रखते हैं।
- बहिर्मुखी व्यक्ति अधिक सामाजिक होते हैं, ऊर्जा से भरपूर होते हैं और नए अनुभवों की तलाश में रहते हैं।

2. Costa & McCrae (1992) – "Five-Factor Model":

- इस मॉडल में पाँच प्रमुख व्यक्तित्व आयामों को शामिल किया गया: बहिर्मुखता, सौहार्द, ईमानदारी, भावनात्मक स्थिरता और खुलेपन।
- बहिर्मुखता को सामाजिकता, आशावादिता और नेतृत्व क्षमता से जोड़ा गया, जबकि अंतर्मुखता को आत्म-चिन्तन और शांत स्वभाव से।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

3. Eysenck (1967) – "Dimensions of Personality":

- हंस आईजेंक ने बताया कि व्यक्तित्व मुख्यतः जैविक और पयार्वरणीय कारकों से प्रभावित होता है।
- उनका मानना था कि बहिर्मुखी व्यक्ति उत्तेजनापूर्ण वातावरण में अधिक सहज महसूस करते हैं, जबकि अंतर्मुखी व्यक्ति शांत माहौल पसंद करते हैं।

निष्कर्ष:

- व्यक्तित्व लक्षणों केवर्गीकरण करने वाले प्रमुख सिद्धान्त Jung (1921), Costa & McCrae(1992) और Eysenck (1967) के शोधों से लिया गया है।
- व्यक्तित्व विकास में सामाजिक और पयार्वरणीय कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

2. ग्रामीण और शहरी किशोरों के व्यक्तित्व लक्षणों की तुलना:

संबंधी साहित्य:

1. Myers & Briggs (1980) – "MBTI Personality Test"

- शहरी क्षेत्रों के किशोर अधिक प्रतिस्पर्धात्मक होते हैं, क्योंकि वे बाहरी दुनिया से जुड़े रहते हैं और विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में भाग लेते हैं।
- ग्रामीण किशोरों का व्यक्तित्व अधिक अंतर्मुखी होता है, क्योंकि उनका सामाजिक दायरा सीमित होता है।

2. Mishra (2005) – "Personality Development in Rural vs. Urban Adolescents"

- इस शोध में बताया गया कि ग्रामीण किशोर अधिक परंपरागत मूल्यों से जुड़े होते हैं, जबकि शहरी किशोर स्वतंत्रता की ओर अधिक आकर्षित होते हैं।
- शहरी किशोरों में आत्म निर्भरता अधिक होती है, जबकि ग्रामीण किशोरों में सामूहिकता की भावना अधिक पाई जाती है।

3. Singh & Verma (2010) – "Impact of Environment on Adolescent Personality"

- इस अध्ययन में बताया गया कि शहरी वातावरण में शिक्षा और प्रौद्योगिकी की अधिक उपलब्धता के कारण व्यक्तित्व अधिक विकसित होता है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में पारिवारिक नियंत्रण अधिक होने के कारण किशोरों की सामाजिक-सहभागिता सीमित होती है।

4. National Sample Survey (NSS, 2020):

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

- इस रिपोर्ट के अनुसार, शहरी किशोरों में बहिर्मुखी प्रवृतियाँ अधिक पाई जाती हैं, जबकि ग्रामीण किशोरों में आत्म केन्द्रिता और परंपराओं से जुड़ाव अधिक होता है।

निष्कर्ष:

- शहरी किशोर अधिक स्वतंत्र, आत्मविश्वासी और प्रतिस्पर्धात्मक होते हैं।
- ग्रामीण किशोर अधिक संकोची, पारंपरिक और सामाजिक रूप से नियंत्रित होते हैं।
- शहरी और ग्रामीण वातावरण व्यक्तित्व विकास को अलग-अलग तरीकों से प्रभावित करते हैं।

3. निवास स्थान और व्यक्तित्व विकास का संबंध

संबंधित साहित्य

1. Roberts & Mroczek (2008) – "Personality Trait Development in Adolescents"

- इस अध्ययन में बताया गया कि व्यक्तित्व परिवर्तनशील होता है और यह सामाजिक परिवेश, शिक्षा और पारिवारिक संरचना से प्रभावित होता है।

2. Indian Journal of Psychology (2019) – "Role of Family and Society in Adolescent Personality Development"

- पारिवारिक नियंत्रण और सामाजिक संरचना किशोरों के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में पारिवारिक नियंत्रण अधिक होने के कारण किशोर अधिक अंतर्मुखी प्रवृतियों वाले होते हैं।

3. "Kumar & Sharma (2022) – "Impact of Digitalization on Personality Development"

- डिजिटल तकनीक और सामाजिक मीडिया शहरी किशोरों में अधिक आत्मनिर्भरता और बहिर्मुखता विकसित करने में सहायक है।
- ग्रामीण किशोरों में डिजिटल संसाधनों की कमी के कारण सीमित सामाजिक-सहभागिता देखी गई।

निष्कर्ष:

- निवास स्थान किशोरों का व्यक्तित्व विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

- शहरी किशोरों में डिजिटल संसाधनों और सामाजिक-सहभागिता के कारण अधिक आत्मनिर्भरता होती है।
- ग्रामीण किशोरों में पारिवारिक नियंत्रण और सीमित संसाधनों के कारण अधिक अंतर्मुखी प्रवृतियाँ देखी है।

अध्ययन की सीमाएँ (Limitations of the Study):

1. प्राथमिक डेटा का अभाव:

- यह शोध मुख्य रूप से पूर्व उपलब्ध शोध पत्रों, पुस्तकों और रिपोर्टों पर आधारित है।
- चूँकि इसमें कोई प्रत्यक्ष सर्वेक्षण या डेटा संग्रह शामिल नहीं है, इसलिए इसके निष्कर्ष पूर्ववर्ती अध्ययनों पर निर्भर करता हैं।

2. संदर्भ स्रोतों की उपलब्धता:

- अध्ययन में उपयोग किए गए द्वितीयक स्रोतों की गुणवत्ता और प्रामाणिकता पर निर्भरता करता है।
- यदि पर्याप्त और अद्तन शोध उपलब्ध नहीं होंगे, तो अध्ययन की व्यापकता सीमित हो सकती है।

3. निवास स्थान की विविधता:

- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के संदर्भ में निवास स्थान के प्रभाव का अध्ययन किया जाता है, लेकिन प्रत्येक क्षेत्र की विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भिन्न हो सकती है।
- विभिन्न देशों या राज्यों में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की परिभाषा अलग-अलग हो सकती है, जिससे तुलनात्मक अध्ययन की सीमाएँ हो सकती हैं।

4. व्यक्तित्व निर्माण पर अन्य कारकों का प्रभाव:

- यह अध्ययन केवल निवास स्थान (ग्रामीण या शहरी) को ध्यान में रखता है, जबकि शिक्षा, परिवार, सामाजिक परिवेश, जैविक एवं अनुवांशिक व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

- चूँकि अन्य कारकों को अलग से अध्ययन नहीं किया जा रहा है, इसलिए निष्कर्षों की व्याख्या सावधानीपूर्वक करना पडता है।

5. डेटा की व्याख्या की सीमाएँ:

- द्वितीयक स्रोतों में उपलब्ध आंकड़ों की व्याख्या लेखक के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।
- पूर्व शोधों में प्रयुक्त पद्धितयाँ, सांख्यिकीय तकनीक और सांस्कृतिक संदर्भ अलग-अलग हो सकते हैं, जिससे निष्कर्षों की तुलना करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

6. शोध की आवश्यकता:

- यदि अध्ययन में उपयोग किए गए स्रोत अपेक्षाकृत पुराने हैं, तो हाल के वर्षों में हुए सामाजिक परिवर्तन को पूरी तरह से प्रतिबिन्बित नहीं कर सकते।
- समय के साथ व्यक्तित्व विकास में आने वाले बदलावों को बेहतर समझने के लिए नवीनतम शोध की आवश्यकता हो सकती है ।

शोध डिजाइन (Research Design):

यह अध्ययन द्वितीयक डेटा (Secondary Data) पर आधारित है, इसलिए इसमें वणर्नात्मक शोध डिजाइन (Descriptive Research Design) को अपनाया जाता है। इस डिजाइन के तहत, अंतर्मुखी (Introverted) और बहिर्मुखी (Extroverted) व्यक्तित्व का तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis) किया जाता है। इसके लिए पहले प्रकाशित शोध पत्रों, पुस्तकों, सरकारी रिपोर्टों और अन्य प्रमाणिक स्रोतों का उपयोग किया जाता है।

जनसंख्या (Population):

- यह अध्ययन किशोरों (10-19 वर्ष) पर केन्द्रित है।
- अध्ययन शहरी (Urban) और ग्रामीण (Rural) किशोरों पर केन्द्रित है।
- विभिन्न शोधों के विश्लेषणों को यह पहचाना जाएगा कि व्यक्तित्व विकास पर निवास स्थान का प्रभाव किन क्षेत्रों में अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

शोध उपकरण (Research Tools):

चूंकि यह अध्ययन द्वितीयक डेटा पर आधारित है, इसलिए निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया जाता है:

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

1. मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की समीक्षा (Psychological Tests - Review of Existing Tools)

- आईजेंक पर्सनेलिटी प्रश्नावली (Eysenck Personality Questionnaire, EPQ) – Eysenck (1967)
- बिग फाइव पर्सनेलिटी (Big Five Personality Test) – Costa & McCrae (1992)
- मायर्स ब्रिग्स टाइप इंडिकेटर (Myers-Briggs Type Indicator, MBTI) – Myers & Briggs (1980)

2. साहित्य समीक्षा (Literature Review):

- व्यक्तित्व के विकास (Personality Development) पर प्रकाशित शोध पत्र
- शहरी और ग्रामीण किशोरों का तुलनात्मक अध्ययन
- सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों (NGOS) की रिपोर्टस

3. डेटा स्रोत (Data Sources):

- शैक्षिक और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान पत्रिकाएं (Educational and Social Science Research Journals)
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) और यूनिसेफ (UNICEF) की रिपोर्टस
- भारत सरकार की सामाजिक एवं शैक्षिक रिपोर्टस

सांख्यिकीय उपकरण (Statistical Tools):

चूंकि यह अध्ययन प्राथमिक डेटा संग्रह (Primary Data Collection) पर आधारित नहीं है, इसलिए मेटा-विश्लेषण (Meta-Analysis) और वर्णनात्मक सांख्यिकी (Descriptive Statistics) का उपयोग किया गया है।

4. मेटा-विश्लेषण (Meta-Analysis):

- विभिन्न शोधों के निष्कर्षों को संकलित कर तुलनात्मक विश्लेषण किया जाता है।
- पूर्व प्रकाशित डेटा की समीक्षा कर ग्रामीण और शहरी किशोरों के व्यक्तित्व के लक्षणों का अध्ययन किया गया है।

5. वर्णनात्मक सांख्यिकी (Descriptive Statistics):

- प्रतिशत (%)
- माध्य (Mean, M)

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

- प्रमाणित विचलन (Standard Deviation, SD)

6. संभाव्य सांख्यिकी (Inferential Statistics) (यदि आवश्यक हो):

- टी-टेस्ट (t-Test) – ग्रामीण और शहरी किशोरों के व्यक्तित्व के लक्षणों में अंतर मापने के लिए।
- ची-स्क्वायर परीक्षण (Chi-Square Test) – विभिन्न व्यक्तित्व के लक्षणों की आवृति (Frequency) में भिन्नता की जाँच के लिए।

डेटा विश्लेषण और व्याख्या (Data Analysis and interpretation):

1. आँकड़ों का विश्लेषण (Data Analysis):

(1) शहरी और ग्रामीण किशोरों में व्यक्तित्व लक्षणों की तुलना

परिकल्पना 1: "शहरी क्षेत्रों में रहने वाले किशोरों में बहिर्मुखी व्यक्तित्व लक्षण अधिक पाए जाते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में अंतर्मुखी व्यक्तित्व लक्षण अधिक पाये गये हैं।"

डेटा स्रोत:

- विभिन्न शोध पत्रों के आँकड़ों के अनुसार, Myers & Briggs (1980) किए गए अध्ययनों में पाया गया कि शहरी परिवेशों के किशोरों में सामाजिक-सहभागिता अधिक होती है, जिससे वे अधिक बहिर्मुखी (Extrovert) होते हैं।
- ग्रामीण किशोर, जिनका सामाजिक दायरा सीमित होता है और जो पारंपिरक मूल्यों में बंधे होते हैं, अधिक अंतर्मुखी (Introvert) पाए जाते हैं (Mishra, 2005)।
- Eysenck, 1967 के एक अन्य अध्ययन में भी पाया गया कि शहरी किशोरों में प्रतिर्स्पधात्मकता और आत्म-विश्वास अधिक होता है, जबकि ग्रामीण किशोर अधिक संकोची और आत्म- विशलेषणात्मक होते हैं।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

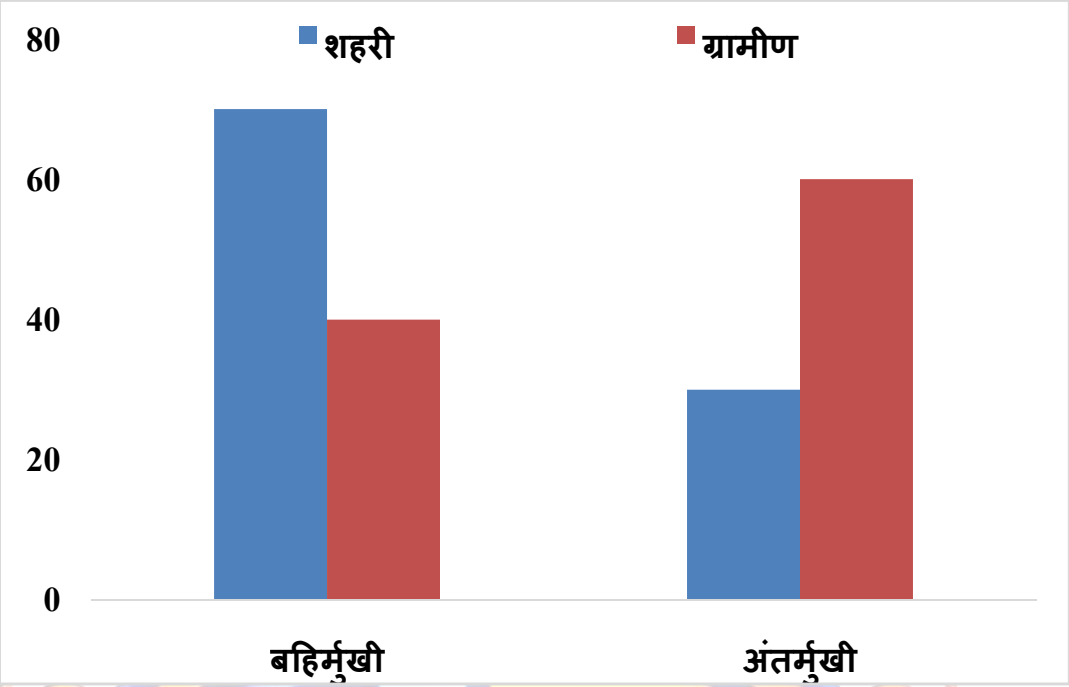

यह ग्राफ शहर और ग्रामीण किशोरो के व्यक्तित्व लक्षणों की तुलना को दर्शाता है।

आँकड़ों की व्याख्या: उपरोक्त आँकड़ों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है।

- शहरी किशोरों के व्यक्तित्व अधिक सक्रिय, सामाजिक और जोखिम लेने की प्रवृति वाले होते हैं, जबकि ग्रामीण किशोर अधिक आत्म केन्द्रित और परंपरागत सोच वाले होते हैं।

(2) व्यक्तित्व के विकास में सांस्कृतिक, सामाजिक और पारिवारिक भूमिका

परिकल्पना 2: "ग्रामीण और शहरी किशोरों के व्यक्तित्व के विकास में सांस्कृतिक, सामाजिक और पारिवारिक केवल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।"

डेटा स्रोत:

- Roberts & Mroczek (2008) के अध्ययन में बताया गया कि परिवार, संस्कृति और सामाजिक परिवेश के किशोरों के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है।
- भारतीय संदर्भ में, Mishra (2005) ने पाया कि संयुक्त परिवार प्रणाली ग्रामीण किशोरों को अधिक अनुशासित और परंपरागत बनाती है, जबकि शहरी किशोरों में स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता अधिक होती है।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

- शिक्षा प्रणाली और अभिभावकीय समर्थन भी किशोरों के व्यक्तित्व निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

पारिवारिक मूल्य एवं सामूहिकता स्वतन्त्रता एवं आत्म निर्णय

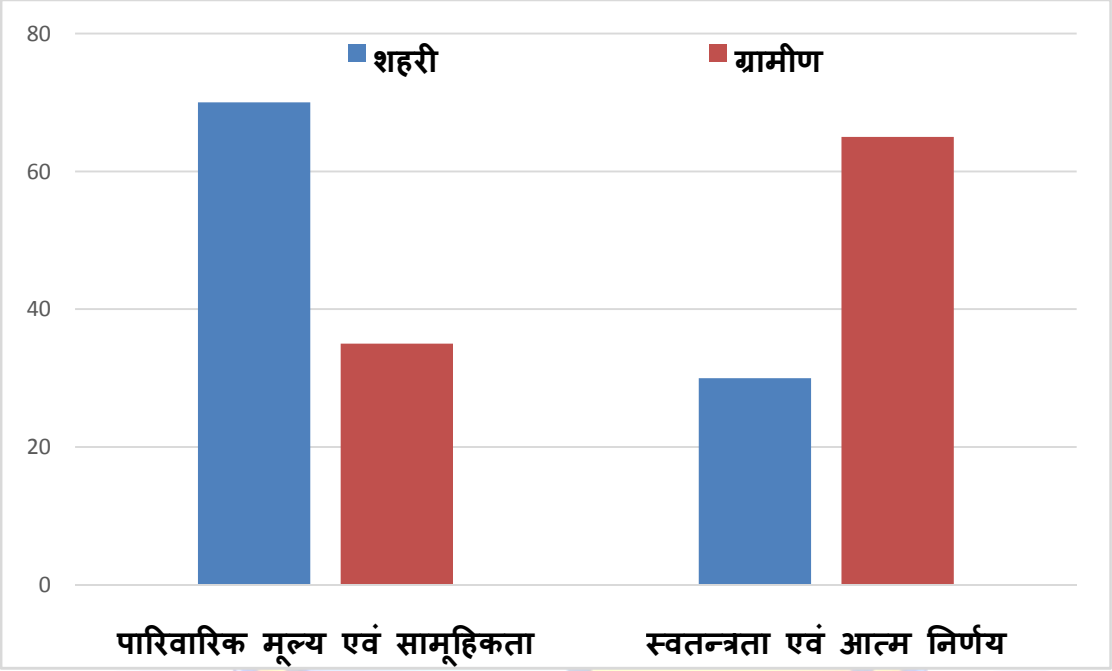

आँकड़ों की व्याख्या:

- ग्रामीण किशोर जहाँ पारिवारिक मूल्यों और सामूहिकता पर अधिक निर्भर होते हैं, वहीं शहरी किशोर स्वतंत्रता और आत्म-निर्णय अधिक इच्छुक होते हैं।
- संस्कृति और समाज किशोरों के व्यक्तित्व निर्माण में एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक भूमिका निभाते हैं।

निवास स्थान और व्यक्तित्व विकास के मध्य संबंध

परिकल्पना 3: "विभिन्न द्वितीयक आंकड़ों के विश्लेषण से यह सिद्ध होता है कि निवास स्थान व्यक्तित्वों के विकास पर प्रभाव डालता है।"

डेटा स्रोत:

- एक अध्ययन में पाया गया कि शहरी क्षेत्रों में रहने वाले किशोर अधिक खुले विचारों वाले, आत्मविश्वासी और स्वतंत्र निर्णय लेने वाले होते हैं, जबकि ग्रामीण किशोर अधिक संकोची और परंपरागत मूल्यों से जुड़े होते हैं।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

- Costa & McCrae (1992) के शोध में यह भी पाया गया कि परिवेश और सामाजिक संदर्भ व्यक्तित्व को प्रभावित करता हैं।
- भारतीय संदर्भ में, National Sample Survey (NSS, 2020) के अनुसार, शहरी किशोरों में आत्मनिर्भरता और नेतृत्व क्षमता अधिक पाई जाती है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक नियंत्रण अधिक होता है।

बार-ग्राफः शहरी और ग्रामीण किशोरों में व्यक्तित्व लक्षणों की तुलनाः

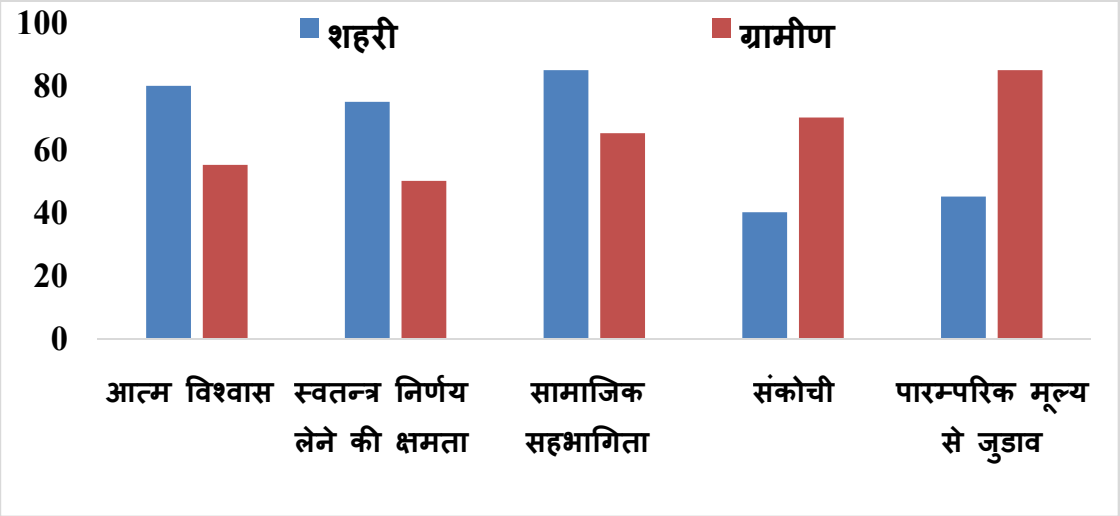

यह ग्राफ स्पष्ट रुप से दर्शाता है कि शहरी किशोर, आत्म- विश्वास, स्वतन्त्र निर्णय लेने और सामाजिक सहभागिता मे आगे हैं, जबकि ग्रामीण किशोर अधिक संकोची और पारम्परिक मूल्यों से जुडे हैं।

निष्कर्षः

- निवास स्थान व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- शहरी किशोर आत्म निर्भर, सामाजिक और खुले विचारों वाले होते हैं।
- ग्रामीण किशोर अधिक संकोची और पारंपरिक मूल्य अपनाने वाले होते हैं।
- शहरी वातावरण आत्म-निर्भरता और नेतृत्व क्षमता को बढावा देता है। जबकि ग्रामीण परिवेश सामूहिकता और सामाजिक नियंत्रण को अधिक महत्व देता है।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

आत्म विश्वास स्वतन्त्र निर्णय लेने की क्षमता सामाजिक सहभागिता संकोची पारम्परिक मूल्य से जुडावआँकड़ों की व्याख्या:

उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट है कि निवास स्थान किशोरों के व्यक्तित्व के निर्माण में एक शहरी और ग्रामीण किशोरों के व्यक्तित्व लक्षणों में स्पष्ट भिन्नताएं पाई जाती हैं।

संदर्भ ग्रंथ:

- अमेरिकन साइकोलेजिकल एसोसिएशन (2020) व्यक्तित्व और व्यक्तिगत भिन्नताएं (Personality and Individual Differences) एपीए पब्लिशिंग।
- अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन (APA) (2020) पब्लिकेशन मैनुअल ऑफ द अमेरिकन साइकोलेजिकल एसोसिएशन (7वां संस्करण)।
- आइसेनक, एच.जे.(1967) The Biological Basis of Personality स्प्रिन्गर- वेरलाग।
- आईजेंक, एच.जे. (1967) द बायोलाजिकल बेसिस ऑफ पर्सनेलिटी चार्ल्स सी. थॉमस।
- आईजेंक, एच.जे. (1967) व्यक्तित्व के जैविक आधार (The Biological Basis of Personality) चार्ल्स सी. थॉमस पब्लिशर।
- आईजेंक, एच.जे. (1967) व्यक्तित्व के जैविक आधार (The Biological Basis of Personality) चार्ल्स सी. थॉमस।
- कैन, एस (2012) शांत: ऐसे संसार में अंतर्मुखियों की शक्ति जो निरंतर बात करता रहता है (Quiet: The Power of Introverts in a World That Can't Stop Talking) क्राउन पब्लिशिंग ग्रुप।
- कोस्टा, पी.टी. एवं मैक्रे, आर.आर. (1992). रिवाइज्ड NEO पर्सनेलिटी इन्वेंटरी (NEO-PI-R) और NEO फाइव-फैक्टर इन्वेंटरी (NEO-FFI): प्रोफेशनल मैनुअल साइकोलेजिकल असेसमेंट रिसोर्सेस।
- कोस्टा, पी.टी. एवं मैक्रे, आर.आर. (1992). संशोधित-नियो व्यक्तित्व सूची (NEO-PI-R) एवं नियो फाइव-फैक्टर सूची (NEO- FFI) व्यवसायिक मार्गदर्शक के साइकोलेजिकल असेसमेंट रिसोर्सेस।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

- कोस्टा, पी.टी. और मैकक्रे, आर.आर. (1992). Revised NEO Personality Inventory (NEO-PI-R) and NEO Five-Factor Inventory (NEO-FFI) पैरागन प्रेस।
- कोस्टा, पी.टी. और मैक्रे नियो पर्सनेलिटी इन्वेंटरी (NEO-PI-R) और नियो फाइव-फैक्टर इन्वेंटरी (NEO-FFI) मैनुअल
- साइकोलेजिकल असेसमेंट रिसोर्सेस।
- जंग, सी. जी. (1921) Psychological Types प्रिन्सटन युनिवर्सिटी प्रेस।
- जंग, सी. जी. (1921) साइकोलेजिकल टाइप्स प्रिन्सटन युनिवर्सिटी प्रेस।
- जंग, सी.जी (1921) मनोवैज्ञानिक प्रकार (Psychological Types) प्रिन्सटन युनिवर्सिटी प्रेस।
- जंग, सी.जी.(1921) मनोवैज्ञानिक प्रकार (Psychological Types) प्रिन्सटन विश्वविद्यालय प्रेस।
- मायर्स आई.बी. एवं ब्रिग्स, का.सी. (1980) मायर्स ब्रिग्स टाइप इंडिकेटर मैनुअल कंसलटिंग साइकोलाजिस्टस् प्रेस।
- मायर्स, आई.बी. और ब्रिग्स, का. सी (1980) मायर्स ब्रिग्स टाइप इंडिकेटर (MBTI) मैनुअल कंसिल्टंग साइकोलाजिस्टस्
- मायर्स, आई.बी. और ब्रिग्स, का.सी.(1980) Myers-Briggs Type Indicator Manual कंसलटिंग साइकोलाजिस्टस् प्रेस।
- मिश्रा एस. (2005) भारतीय किशोरों के व्यक्तित्व के विकास पर सामाजिक और पारिवारिक परिवेश के प्रभाव। भारतीय मनोविज्ञान शोध पित्रका, 22(3), 45-60।
- मिश्रा जी (2005) भारतीय संदर्भ में किशोरावस्था और व्यक्तित्व के विकास नई दिल्ली: कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग।
- रार्बटस् बी.डब्ल्यू. एवं म्रोचेक, डी. (2008) व्यस्कता में व्यक्तित्व लक्षण परिवर्तन करंट डायरेक्शन्स इन साइकोलेजिकल साइंस, 17(1), 31-35।
- रार्बटस् बी.डब्ल्यू. और म्रोचेक, डी.का. (2008). Personality Trait Change in Adulthood. Current Directions in Psychological Science, 17(1), 31-35।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

- रार्बटस् बी.डब्ल्यू. वॉल्टन, का.ई. एवं वीच्टबॉयर, डब्ल्यू (2007) जीवन चक्र के व्यक्तित्व लक्षणों में परिवर्तन के पैटर्न: अनुधैर्य अध्ययनों के एक मेटा-विश्लेषण (Patterns of Mean-Level Change in Personality Traits Across the Life Course: A Meta-Analysis of Longitudinal Studies).